“काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में विषय वैविध्य”

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर

पी.एच.डी हिन्दी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव की रूपरेखा

सत्र

2021-22

शोधार्थी

पल्लवी फताटे

पंजीयन संख्या:KSAWU/Ph.D/476/2020-21

शोध निर्देशक

डॉ. अमरनाथ प्रजापति

सहायक प्राध्यापक

विभागाध्यक्ष

डॉ. नामदेव एम.गौडा

प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर

प्रस्तावना:

हिन्दी साहित्य के एक प्रख्यात लेखक के रूप में काशीनाथ सिंह अपनी सेवाएं दे रहें हैं। वे एक सफल उपन्यासकार, कहानीकार एवं नाटककार के रूप में जाने जाते हैं। काशीनाथ सिंह साठोत्तरी पीढ़ी के हिन्दी कथा लेखन की चार यारों में से एक हैं। ज्ञानरंजन, रवीन्द्र कालिया और दूधनाथ इनके तीन यार हैं। इस पीढ़ी की शुरुआत हिन्दी कथा में नई कहानी आंदोलन के बाद हुई। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को हम जितना जानने का प्रयास करते हैं, कई सवाल उतना ही प्रबल होता जाता है।

काशी जी ने पूरी समग्रता के साथ सामयिक समस्याओं को अपनी रचना में समेटने का प्रयास किया है। अपने उपन्यासों में नये-नये मुद्दों को गम्भीरता के साथ प्रस्तुत किया है। सच्चा साहित्य सत्ता एवं समाज की आलोचना करके विपक्ष की भूमिका निभाता है। आज कॉरपरेट पूंजी की घुसपैठ ने मानव को मानव से अलग कर दिया है। युवापीढ़ी को अपनी संस्कृति एवं परम्परा के प्रति सजग होना जरूरी है।

साहित्य के क्षेत्र में इन्होंने कई प्रकार की रचनाओं को दिया है। उनका पहला उपन्यास 'अपना मोर्चा' 1967 ई. में प्रकाशित हुआ जो छात्र आंदोलन को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इसमें विश्वविद्यालय और प्रशासन की भूमिका पर चर्चा की गई हैं। तत्कालीन समस्याओं पर यथोचित्त प्रकाश डाला गया हैं। यह उपन्यास हमारे देश के साथ जापान में भी बहुत लोकप्रिय हुआ। इसका अनुवाद जापानी में हुआ है। 'अपना मोर्चा' उपन्यास देश के युवाओं का प्रतिरोध, मानसिकता का दस्तावेज है।

लंबे समय तक वे कहानीकार के रूप में ही विख्यात रहे। बाद में संस्मरण के क्षेत्र में उतरने पर उन्हें काफी ख्याति प्राप्त हुई। उनका दूसरा उपन्यास 'काशी का अस्सी' प्रकाशित हुआ, जो प्रस्तुतः कहानियों एवं संस्मरणों का सम्मिलित रूप है। सन् 2002 में प्रकाशित 'काशी का अस्सी' को उनका सबसे महत्वपूर्ण काम माना जाता है। 'काशी का अस्सी' काशीनाथ सिंह जी का पहचान है और अस्सी इन

कथाओं का केंद्र है। इस उपन्यास में वाराणसी के रंगीन जीवन के विस्तृत चित्रण में अद्वितीय माना जाता है।

काशीनाथ सिंह का तीसरा उपन्यास है 'रेहन पर रग्घू' है। उपन्यास को 2011 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। इसमें आज के विभिन्न द्वंद्वों की संश्लिष्ट अभिव्यक्ति हुई है। उपन्यासकार ने सामाज में आई नई परिवर्तन का यथार्थ चित्रण किया है। रिश्तों- नातों का संबंध, पुत्रों द्वारा बूढ़े माँ-बाप की उपेक्षा करना इस उपन्यास में दिखाई देता है। इस सामूहिकता की दुनिया में भूमंडलीकरण के कारणों से मानवीय संबंध संवेदना निर्मम ध्वंस होता जा रहा है। यह उपन्यास गांव, शहर, अमेरीका तक के भूगोल में फैला हुआ है। समकालीन मनुष्य अपने जीवन में अकेले और तनाव की स्थिति में पड़ता जा रहा है। भूमंडलीकरण के प्रभाव से रिश्तों में कड़वाहट, कसावट उत्पन्न हो गई है। इस उपन्यास में धन और तन की लालस दिखाई पड़ती है।

'महुआचरित' काशी जी का एक लघु उपन्यास है। मध्यवर्गीय सामाज की सच्चाई को देखते हैं। स्त्री विमर्श के कई प्रश्नों का आकार इसमें दिखाई देती है। लेखक ने सामाज में रहती एक स्त्री की भावनाएँ और पीड़ा को महुआ के माध्यम से दर्शाया है। महुआ एक शिक्षित स्त्री है, अपने पसंद से जीवन को जीना चाहती है।

काशीनाथ सिंह जी के कलम से निकली हुई मिथकीय पृष्ठभूमि की यह पहली कथा 'उपसंहार' है। उपन्यास की शुरुआत उत्सुकतापूर्ण है। उपसंहार में काशीनाथ सिंह जी का यह लोक एवं जनभाषा यात्रा का आकर्षक सांस्कृतिक मोड़ है। यह उपन्यास को गद्य और पद्य में लिखा गया है। इस उपन्यास में चित्रात्मक शैली, वर्णनात्मक, प्रश्नात्मक, संवाद, फ्लैशबैक शैली विशेष रूप में देखते हैं।

'उपसंहार' इस उपन्यास में महाभारत के उत्तर कथा को बिल्कुल नयी दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। इस मिथकीय रचना में आधुनिक सन्दर्भ के अनगिनत सूत्र जुड़े हुए हैं। काशीनाथ सिंह जी के बाकी उपन्यासों से 'उपसंहार' यह बिल्कुल अलग है। मिथक आधुनिक युग की देन है। काशीनाथ सिंह जी ने

मिथक के जरिए से समकालीन यथार्थ और परिदृश्यों को दिखाने की कोशिश किये हैं। कृष्ण को ईश्वर के रूप में देखते हैं। पर इस उपन्यास में कृष्ण को एक साधारण मनुष्य के विसंगतियों से मजबूरन से जीना दिखाया गया हैं। मनुष्य को पग-पग पर सचेत करता है। मनुष्य नियति के कर्मचक्र के आगे बेबस है। यह उपन्यास मानव मूल्यों को बचाए रखने की एक सार्थक प्रयास है।

काशीनाथ सिंह की कहानियां सहज है, जो पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी सी लगती है। उसमें जीवन मूल्यों की त्रासदी और वर्तमान राजनीति और इनके कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ के विभिन्न स्वरूप को देखते हैं। काशीनाथ सिंह की कहानियां भारत की आजादी के बाद संबंधों के नए बदलाव, प्रेम के नए चेहरे, स्त्री- पुरुष संबंध, अकेलापन, बाजारबाद, भूमंडलीकरण, नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएं विडंबनाओं को परिचित कराती है।

कहानियों में समाज की धर्म, संस्कृति, राजनीति के वीरूप चेहरों को देखते हैं। इनकी कहानियों में जो मनुष्य है, उसकी स्थितियों, असंगतों से हारा हुआ नहीं है, वो उस स्तिथियों से जीवन भर संघर्ष करके मोती खोज लेता है।

काशीनाथ सिंह साहित्यिक व्यक्तित्वों के जीवन से संबंध संस्मरण लेखन की अपनी अनूठी शैली के लिए भी जाने जाते है। इनकी रचनाओं की भाषा सरल, लोक एवं जनभाषा यात्रा का आकर्षक संस्कृतिक का मोड़ है। काशीनाथ सिंह जी की भाषा कथा साहित्य में अधिक से अधिक अर्थ, प्रश्न, तर्कों को समेटा हुआ है।

कथा साहित्य की भाषा इनका प्राण है। तीक्ष्ण भाषा शैली को प्रमुख रूप से जगह दी गई है। काशीनाथ सिंह की लेखनी समाज की विसंगतियों तथा विषमताओं को उसी परिवेश के, भाषा के साथ जैसा है वैसा व्यक्त कर देते है, जो समान्य लोग भी ग्रहण कर लेते हैं।

प्रस्तावित शोध का महत्व और प्रासंगिकता :

समाज निरपेक्ष साहित्य की प्रासंगिकता संदिग्ध है। साहित्य में सामाजिक समस्याओं का अंकन अनिवार्य है। आधुनिक हिंदी साहित्य इसके लिए पर्याप्त प्रमाण है। प्रत्येक समय के साहित्य में इन समाज का यथार्थ अनावृत होता है। रचनाकार समाज में वर्तमान विसंगतियों के खिलाफ आवाज उठाता है। सामाजिक परिवर्तन के लिए एक व्यापक जन जागरण का कार्य भी करता है।

काशीनाथ सिंह एक ऐसे साहित्यकार है, जो अपने समय की जटिल समस्याओं को चित्रित करते हुए, अपनी सृजनात्मक विद्रोही, मानसिकता की अभिव्यक्ति दी है। उन्होंने पूरी समग्रता के साथ समसामयिक समस्या को अपनी रचना में समेटने का प्रयास किया है।

समकालीन कहानी ने जिस प्रकार जीवन और समाज के प्रति बिल्कुल जागरूक है। गहराईयों से उसके यथार्थ को प्रस्तुत किया है वैसे ही काशी जी ने भी अपनी रचनाओं के समय की गहराइयों में गोता लगाया है। उनकी सभी कहानियों में समकालीन दौर की सभी प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है।

समकालीन कहानीकार अपने समय और समाज के प्रत्येक रचना अपने जीवन का दस्तावेज है। समाज की बदलती हुई परिस्थिति का प्रभाव व्यक्ति के मन पर भी गहराई से पड़ता है। उसकी दृष्टि परंपरागत रास्तें से हट गई। जीवन मूल्यों की अवधारणा में परिवर्तन हुआ। मानवीय संबंधों के आधार बने।

आधुनिक युग में राजनीति जीवन के हर कार्यरत है, उसने मानव व्यापार की हर दिशा को प्रभावित किया है। आज का राजनीतिक परिदृश्य की सबसे बड़ी विसंगति राजनीतिक व्यवस्था का भ्रष्ट होता है। भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था के विविध रूप समकालीन कहानियों में दर्ज हुआ है। इसके साथ राजनीतिक नेताओं के भ्रष्ट आचरण और स्वार्थपरता को लेकर भी कई कहानियों की रचना हुई है। काशीनाथ सिंह ने भी अपनी कहानियों में राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त अनीतियों और विसंगतियों का पर्दाफाश किया है।

अतः काशीनाथ सिंह का साहित्य वर्तमान समय में अत्यंत ही प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है। इस पर शोध करना हिन्दी साहित्य के लिए अमूल्य निधि होगी।

प्रस्तुत शोध की रूपरेखा:

प्रथम अध्याय:

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में समाज और राजनीति

1) समाज का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप
2) राजनीति का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप
3) समाज और राजनीति में अंतर्संबंध
4) काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में समाज
5) काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में राजनीति

द्वितीय अध्याय:

काशीनाथ सिंह की कथा साहित्य में मिथकीय सन्दर्भ

1) मिथक: अर्थ, परिभाषा, स्वरूप
2) साहित्य और मिथक का संबंध
3) मिथक का आधुनिक सन्दर्भ
4) काशीनाथ सिंह के उपन्यासों में मिथकीय सन्दर्भ

तृतीय अध्याय:

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में बनारस की संस्कृति

1) पाश्चात्य संस्कृति
2) धार्मिक संस्कृति
3) भाषाई संस्कृति

चतुर्थ अध्याय:

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में वृद्धों की दशा और दिशा

1) भूमंडलीकरण का प्रभाव
2) गांव और शहरी जीवन
3) भौतिकवाद का प्रभाव

पंचम अध्याय:

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में स्त्री चिंतन

1) अशिक्षित स्त्री
2) शिक्षित स्त्री
3) गृहणी स्त्री
4) नौकरिपेशा स्त्री
5) अस्मिता के लिए संघर्षरत स्त्री

छठा अध्याय:

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में भाषा शैली

भाषा:

1) सहज भाषा
2) संस्कृतनिष्ठ भाषा
3) ठेठ भाषा

4) गाली- गलौज की भाषा

शैली

1) वर्णनात्मक शैली

2) विचारात्मक शैली

3) चित्रात्मक शैली

4) पूर्वदीप्ति शैली

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ:

कहानी संग्रह:

1) लोग बिस्तरों पर
2) सुबह का डर
3) आदमीनामा
4) नयी तारीख
5) कल की फटेहाल कहानियाँ
6) प्रतिनिधि कहानियां
7) सदी का सबसे बड़ा आदमी
8) 10 प्रतिनिधि कहानियां
9) कहनी उपखान (संपूर्ण कहानिया)
10) संकलित कहानियां
11)कविता की नयी तारीख
12)खरोंच

उपन्यास:

1) अपना मोर्चा
2) काशी का अस्सी
3) रेहन पर रग्घू
4) महुआ चरित

5) उपसंहार

सहायक ग्रंथ:

संस्मरण:

1) याद हो कि न याद हो
2) आछे दिन पाछे गए
3) घर का जोगी जोगड़ा

आलोचना:

1) हिन्दी में सयुंक्त क्रियाएं
2) आलोचना भी रचना है
3) लेखक की छेड़छाड़

नाटक:

1) घो आस

साक्षात्कार:

गपोड़ी से गपशप

संपादन:

1) परिवेश
2) काशी के नाम

काशीनाथ सिंह पर केंद्रित विशिष्ट साहित्य:

1) कहन

2) बनारस जन

3) संबोधन

सन्दर्भ ग्रंथ:

1) अग्निहोत्री कृष्ण, स्वातंत्र्योत्तर कहानी का रूप स्वरुप, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1983

2) उपाध्याय देवराज, आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान, साहित्य भवन इलाहाबाद,संस्करण 1956

3) कुमार रजनीश, हिन्दी कहानी के आंदोलन उपलब्धियां एवं सीमाएं, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली संस्करण 1986

4) जगताप रमेश, काशीनाथ सिंह का कथा साहित्य, चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2005-06

5) दूबे मनीष, काशी पर कहन, मीरा पब्लिकेशन इलाहाबाद, 2000

6) देसाई डॉ. योगेश, गरीबीली गरीबी के कथाकार काशीनाथ सिंह, विकास प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2012

7) श्रीवास्तव आनंद, काशी का अस्सी एक मूल्यांकन, आनंद प्रकाशन कलकत्ता, संस्करण 2013

8) कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका, अक्षर प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1969

9) लोटलीकर डॉ. संदीप, काशीनाथ सिंह का संस्मरणात्मक साहित्य, विद्या प्रकाशन, संस्करण 2005

10) उषापुरी विद्यावाचस्पति, मिथक उद्भव विकास तथा हिंदी साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस प्रकाशन नई दिल्ली

11) डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2004

12) शंभुनाथ, मिथक और भाषा, दिलीप कुमार मुखर्जी प्रकाशन कलकत्ता, संस्करण 1681

13) मालती सिंह, मिथक एक अनुशीलन, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद

14) पल्लव, अस्सी का काशी, साहित्य भंडार इलाहाबाद, संस्करण 2015

15) पल्लव, गपोड़ी से गपशप, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2013